* ओ३म् वेदो विजयतेतराम् *

गोस्वामी श्री तुलसीदासजी कृत

रामायण

के

अनुयायी रामायण-मण्डल

के प्रति-

प्रश्न ।

सुनि आश्चर्य करहिं जनि कोई,
सत्संगति महिमा नहिं गोई ।
शठ सुधरहिं सत्संगति पाई,
पारस परसि कुधातु सुहाई ॥

आर्य्यवत्सर १९७२९४९०१६.

वैदिक-यन्त्रालय, अजमेर.

26 ??

दूसरीवार
१०००

मूल्य
॥

4865

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर 4864
पु. परिग्रहण क्रमांक ....

भूमिका ॥

अहो! बड़ी विचित्रता की बात है कि इस उन्नति के युग में भी जब कि भारतवर्ष के नेता लोग एक ओर प्राचीन शास्त्रों के भरे हुए ज्ञान को फैलाने के लिये अपना सर्वस्व होमने के लिये तय्यार हो रहे हैं वहां दूसरी ओर यह प्रयत्न किया जारहा है कि भारतवासी अपनी वर्तमान स्थिति से रञ्चमात्र भी न हटें, प्राचीन शास्त्रों के प्रचार के मार्ग में रुकावट डालने वाला आजकल एक नया ढङ्ग निकला है वह रामायणमंडलों की रचना है, इन में भी तारीफ़ यह है कि वाल्मीकीयरामायण को कोई पास नहीं फटकने देता नहीं तो सम्भव है कि बहुत सी कुरीतियां और उलटे विचार नष्ट होजायँ और संस्कृत विद्या के प्रचार में भी सहायता मिले, तुलसीदासकृत रामायण को लोग पढ़ते हैं परन्तु विचारपूर्वक नहीं, कारण उसमें कुसंस्कारों की भरमार इस प्रकार है कि उसमें जो उपदेश की बातें हैं वे पढ़ने वालों पर कुछ प्रभाव नहीं डाल सक्तीं, इस कठिनता को दूर करने की दृष्टि से यह रामायणप्रश्न मुद्रित कराये गए हैं, पहली प्रतियां समाप्त होजाने तथा मांग बढ़ी हुई होने के कारण यह द्वितीयावृत्ति प्रकाशित कीगई है।

२१-६-१६. } श्रीहरिश्चन्द्र त्रिवेदी.

ओ३म् ॥

सच्चिदानन्देश्वराय नमो नमः ॥

आज इस देश में कौन मन्दजन है जो गोस्वामी तुलसीदासजी और रामायण को नहीं जानता हो। ऐसे महात्मा के ऐसे ग्रन्थ पर हरएक शुभाभिलाषी को गंभीर बुद्धि से विचार करना उचित है। धर्म्मपुस्तक और साहित्य की शिक्षा के अनुसार ही उस समाज वा जाति के सदाचार, विचार, विश्वास और अन्तःकरण बनते बिगड़ते रहते हैं। अतः मैं रामायण के समस्त भक्त और प्रेमियों से सविनय निवेदन करता हूं। आशा है कि हितबुद्धि से विचार सभ्यतापूर्वक समाधान कर अनुगृहीत करेंगे।

१–गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि '**हरिहर निन्दा सुनहिं जो काना, होइ पाप गोघात समाना**' अब मैं पूछता हूं कि जलन्धर की स्त्री वृन्दा का पातिव्रत भंग करना, धर्म्मात्मा राजा वलि को छलना, मोहिनीरूप से विश्वासी असुरों को धोखा देना और "**असुर सुरा विष शङ्करहिं, आपु रमा मणि चारु। स्वारथ साधक कुटिल तुम, सदा कपट व्यवहारु**" सदा ही छल का व्यवहार रखना इत्यादि २ क्या विष्णु भगवान् की निन्दा नहीं? और इस वर्णन से आप कौनसी उत्तम शिक्षा ग्रहण करते हैं? वृन्दा और विष्णु की कथा जैसे अश्लील वर्णन से आप किस सदाचार का अनुकरण कर रहे हैं? समुद्र-मथन के पूर्व लक्ष्मी नहीं थीं फिर लक्ष्मी का स्वरूप से अनादित्व कैसे?।

२--'**सती कपट जानेउ सुर स्वामी**' '**सती कीन्ह चह तहउं दुराऊ**' '**देखहु नारि सुभाव प्रभावा, प्रेरि सतिहिं जेहि झूठ कहावा**' इत्यादि पदों से सती व महादेवजी की निन्दा नहीं तो क्या ? एक तुच्छ स्त्री भी अपने पति के सामने झूठ बोलने और कपट करने से हिचकती रहती है किन्तु यहां सती से ये दोनों ही अनुचित. व्यवहार करवाए जाते हैं। इससे महादेव की सर्वज्ञता भी नहीं रहती, महादेवजी सती को त्यागते हैं। क्यों ? यदि कहैं कि '**सती किन्ह सीता करवेषा**' अर्थात् सती ने सीता का रूप धारण किया, अतः महादेवजी ने सती को त्यागा सो यह समाधान ठीक नहीं क्योंकि इस अवस्था में पार्वतीजी से भी व्याहना उचित नहीं था क्योंकि सीता ने भी पार्वती का स्वरूप धारण किया है और सीता ही का अंश अर्थात् एक टुकड़ा पार्वतीजी हैं फिर महादेवजी ने पार्वतीजी को क्यों व्याहा ? और भी शिव के समान रामजी को भी सीताजी का त्यागना उचित था क्योंकि सीता पार्वतीजी बनीं वे पार्वती रामजी की इष्टदेवी हैं। यह भी शोचनीय है कि झूठ व कपट के हेतु सती का त्याग नहीं किन्तु, सीता के वेष बनाने के हेतु। इससे रामायणप्रेमी झूठ और कपट को किस दृष्टि से देखते हैं ? प्रेमीभक्तो ! रामजी के परमभक्त शिवजी की काली, दुर्गा, सती पार्वती आदि कितनी स्त्रियां थीं ? और कामरूदेश में सतीजी के किस अंग की पूजा होती है ? और इससे कौनसा प्रेम टपकत

है ? श्रीरामजी ने शिव के किस अंग की स्थापना रामेश्वर में की है ? शोक ! ऐसी घृणित वस्तु की पूजा के प्रचार से मनुष्य का आचरण भ्रष्ट नहीं हुआ ?, शिवजी का परिवार भी कैसा उत्तम—स्वयं पंचमुख, पुत्र कार्तिकेय छः मुख, गणेशजी हाथी मुख, इत्यादि २ ।

३--'**गौतम शाप परमहित माना**' इससे देवराज इन्द्र के सब अंगों का बिगड़ कर चलनी बन जाना व पुनः सृष्टिनियम के विरुद्ध सुधरना '**शशि गुरुतियगामी**' इससे चन्द्रमा का निज गुरुपत्नी के साथ सहवास करना और उससे सकल चन्द्रवंशी राजाओं की उत्पत्ति माननी इत्यादि २ वर्णन से क्या स्वयं गोस्वामी तुलसीदासजी सब देवों की निन्दा नहीं करते ? चन्द्रमा और इन्द्र की ऐसी निन्द्य और अकथ्य कथा के पढ़ने पढ़ाने, सुनने सुनाने, गाने गवाने से रामायण--मण्डल कौन हितमंगल समझता है ? यदि कहें कि ये सब निन्दाएं नहीं, किन्तु देवों का सच्चा इतिहास है तो ऐसे देव अवश्य अपूज्य और त्याज्य ही ठहरेंगे फिर इनके वर्णन से क्या लाभ ? ।

४--घटयोनि अर्थात् अगस्त्य और वसिष्ठ की उत्पत्ति की कथा से कौनसी अपूर्व भक्ति उत्पन्न होती है ? मित्र और वरुण देवताओं की इससे कौनसी शोभा बढ़ती है ? ऐ प्रेमीमण्डल ! टुक भी तो इस पर ध्यान दे । वायुदेव की किसी वानर की स्त्री **केशरी से**

प्रीति और उससे हनुमान् का जन्म । इससे कौनसी अपूर्व शिक्षा ग्रहण करते हैं ? ।

५--मैं कहांतक लिखूं, रामायण के किसी एक नायक नायिका का भी ठीक पता नहीं । सब से प्रथम श्री सीताजी की ही उत्पत्ति ऋषियों के लोहू से मानी गई है । श्रीरामचन्द्र की अग्निदेव के चरु अर्थात् हवन सामग्री की और ब्रह्मचारी शृंगी ऋषि की सहायता से, यज्ञकर्त्ता स्वयं शृंगी ऋषि का जन्म एक हरिनी की सींग से, रामचन्द्र के गुरु वसिष्ठजी का भूमिपतित मैत्रावरुण सम्बन्धी वीर्य से, मिट्टी के घड़े से अगस्त्य का, मिट्टी के ढेर से ऋषि वाल्मीकि का, इस प्रकार पशु, पक्षी, लकड़ी, पत्थर, नदी, नाला, कान, हाथ, समुद्र आदिकों से बड़े २ आदमी उत्पन्न हुए हैं, किन्तु अपनी २ माता के गर्भ से नहीं । क्या आश्चर्य ! क्यों प्रेमियो ! आप इसी के विश्वासी हैं न ? ।

६--परशुरामजी का निज माता का हनन करना, चित्रकेतु को करोड़ों स्त्रियों का रखना, एक ही समय में दशरथजी के तीन स्त्रियों का होना, दक्ष और महादेव, ससुर और दामाद में ईर्ष्या द्वेष का होना, इन्द्र का घोड़े का चुराना, नारद और ब्रह्मादिक देवों का भी अनुचित कर्म में फँसना, इत्यादि अनेकानेक वर्णन से गोस्वामी तुलसीदासजी कौनसा मुक्ति का मार्ग बतला रहे हैं ? और आप लोग इससे कौनसा सदाचार बढ़ा रहे हैं ? ।

७-मेरे प्रेमी भाइयो ! रामायण को एक कागभुशुंड अर्थात् कौवा ने गाया है और आज भी वह सर्वदा चिड़ियों को सुनाया करता है ऐसा गोस्वामी तुलसीदासजी मानते हैं, क्यों आप इसके विश्वासी हैं न ? वह काग कहां है, क्या किसी रामायण के प्रेमी ने उनका दर्शन पाया है ?, चारों वेद, पुराण, नदी, वृक्ष, पृथ्वी, वायु, अग्नि, समुद्रादिक जड़ पदार्थ भी मनुष्य के रूप धारण और मनुष्यवत् व्यवहार करते हैं । प्रेमियो ! कहो तो रामायणजी भी कभी रूप धारण कर आप को दर्शन देते हैं या नहीं ? यदि नहीं तो आप उसके प्रेमी नहीं । यदि देते हैं तो रामायणजी कौनसा रूप धारण करते हैं ?, शोक ! गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि इस पृथिवी को सांप, शूकर, कछुआ, हाथी और पर्वत वगैरह पकड़े हुए हैं । सूर्य और चन्द्र को एक असुर राहु ग्रसता है । चन्द्र समुद्र से उत्पन्न होता है इत्यादि २ । बहुत ही शोक की बात है कि आज स्कूल का एक बच्चा भी ऐसी अज्ञानता की बात नहीं कहेगा । प्रेमियो ! वेद और ज्योतिःशास्त्र पढ़ देखो गोस्वामी तुलसीदासजी की ये सारी बातें झूठी ठहरेंगी ।

८-पुनः गोस्वामी तुलसीदासजी ने वाल्मीकीय रामायण से बहुतसी बातें विरुद्ध लिखी हैं, जैसेः-वाल्मीकि में अहल्या के पत्थर होने का वर्णन नहीं है, धनुष् को कुछेक आदमी उठा लेते थे, जनकपुर के बाग में पार्वतीजी की पत्थर की मूर्ति नहीं थी, धनुष् तोड़ते ही परशुरामजी नहीं आए थे, लक्ष्मण और परशुराम

में वार्तालाप नहीं हुआ था, राम ने रामेश्वर में शिवलिङ्ग स्थापित नहीं की, अब आप किसको सत्य मानेंगे—गोस्वामी तुलसीदासजी को जो कि अन्धकार के अर्थात् यवनों के ज़माने में हुए अथवा ऋषि वाल्मीकिजी को जो कि स्वयं मर्यादापुरुषोत्तम महाराजा श्रीरामचन्द्रजी के समय में हुए हैं। यदि कल्पभेद मानें तो वाल्मीकि से कल्पभेद बतावें।

९—रामचन्द्रजी के ऊपर अन्याय करने का स्वयं गोस्वामी तुलसीदासजी आक्षेप करते हैं। क्या इसका समाधान आप कर सकते हैं? जैसे—'**जेहि अघ बधेउ व्याध जिमि बाली, फिरि सुकण्ठ सोइ कीन्ह कुचाली। सोइ करतूति विभीषण केरी, सपनेहु सो न राम हिय हेरी॥**

१०—रामजी विष्णु के अवतार थे? या साक्षात् परमात्मा थे? क्या आप रामायण से इसका उत्तर दे सकते हैं? गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं "**नहिं कलिकर्म न भक्ति विवेकू। रामनाम अवलम्बन एकू॥**" फिर भक्ति २ आप क्यों शोर मचाते। फिर जन्म भर में या दिन में एक ही वार "राम" यह शब्द उच्चारण कर लेना ही बहुत है, तब आप वारंवार इतने ज़ोर से क्यों चिल्लाते? देखिये "**सहस्र नाम सम सुनि शिव वानी, जपि जेई शिव संग भवानी**" आप इसको मानते हुए भी झांझ और ढोलक के तोड़ने और पीटने की क्यों बेगार

उठाते हैं ? "महिमा जासु जान गणराऊ" क्या खूब ! सम्पूर्ण पृथिवी की और राम इन दो अक्षरों की परिक्रमा करना तुलसीदासजी के सिद्धान्त के अनुसार बराबर है । तब ही तो रामायण-प्रेमी एक ही स्थान से त्रिलोक की झांकी करते होंगे । आहा ! यदि ये व्यवहार में भी ऐसी दशा दिखलाते तो सत्य माने जाते । धर्म्म के नाम पर तो जो चाहो सो बकदो गमार फँस ही जायंगे।

प्रेमी भक्तजनो ! ईश्वर के नाम पर कुछ विचार कीजिये, पक्षपात छोड़िये, मनुष्यता की ओर ध्यान देके ज्ञान की ओर आइये। मैंने अभी यहां केवल दो चार बातें दिखलाई हैं । यदि कोई रामायण के विद्वान् प्रेमी प्रेमपूर्वक सन्तोषदायक समाधान करेंगे तो उसको धन्यवादपूर्वक स्वीकार करूंगा । द्वेषबुद्धि से नहीं, किन्तु मनुष्यजाति के कल्याणार्थ यह लेख लिखा गया है ।

निवेदक निखिल-मनुष्यशुभाभिलाषी—

हरिश्चन्द्र त्रिवेदी,

२१-६-१९१०. } **अजमेर.**

गुरु विरजानन्द ग्रन्थ
पु. संग्रहण क्रमांक 4864
दयानन्द महिला म

ओ३म्

श्रीहरिश्चन्द्र त्रिवेदी, अजयमेरु की प्रकाशित कीहुई पुस्तकें-

गोस्वामी श्री तुलसीदासजी कृत 'रामायण के प्रति प्रश्न' रामायण प्रेमियों के पढ़ने योग्य है, मूल्य)।।

प्रश्नोत्तरीय संख्या १—श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज निर्मित सत्यार्थ-प्रकाश के ऊपर किये हुए आक्षेपों का अकाट्य उत्तर, मू०)।।।

प्रमादभैषज्य मूल्य)।।

शास्त्रार्थ अजमेर--जो कि जैन पं० गोपालदासजो वरैया और स्वर्गवासी श्रीमान् स्वामी दर्शनानन्दजी महाराज के मध्य अजमेर में हुआ.

यह शास्त्रार्थ प्रत्येक आस्तिक के पढ़ने और जैनियों के उत्सवों पर बांटने योग्य है। मूल्य)।।।

१०) रुपये से अधिक की खरीदनेवालों को २ रुपये सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा.

पुस्तक मिलने का पता—

श्रीहरिश्चन्द्र त्रिवेदी,

वैदिक-यन्त्रालय, अजमे